23.8.65 प्रातःक्लास ॐ पिताश्री

इस समय जो भी सेंटर्स के बच्चे हैं यह जरूर समझते होंगे कि मधुबन में ब्रह्मा तन से शिवबाबा मुरली चलाते होंगे। और कोई संस्था नहीं होगी ; क्योंकि शाखाएं तो बहुतों की हैं ना। वह टेप आदि भरते हैं पता नहीं है जहॉ उनकी हेड ऑफिस होगी। जहॉ उन्हों का बड़ा गुरू रहता होगा उनको ही याद करते होंगे। निराकार परमपिता परमात्मा को तो तुम्हारे सिवाय कोई भी याद नहीं करता होगा। इस संगम समय ही परलौकिक बाप आते हैं। बच्चों को बैठ परिचय देते हैं। और बच्चे निश्चय बुद्धि हो उसी धुन में रहते हैं। परमपिता परमात्मा इस समय मुरली चलाते होंगे। शास्त्रों में भी है मधुबन में कृष्ण मुरली बजाते हैं। मधुबन मुख्य तो है एक। बाकी सब जगह मुरली जाती है। .....शिवबाबा मुरली चलाते हैं। यह कब किसकी बुद्धि में नहीं आ सकता। यह किसको पता ही नहीं है। जहॉ2 तुम्हारे सेंटर खुलते रहते हैं सभी यह समझते हैं शिवबाबा की मुरली बजती है ब्रह्मा द्वारा। जो फिर ब्रह्मा–सरस्वती और सब ज्ञान गंगाएं सुनकर और सुनाती हैं। बुद्धि में शिवबाबा तो याद है ना। शिवबाबा जिसको भगवान कहा जाता है। शिवबाबा मुरली सुनाते थे यह कोई भी शास्त्रों में नहीं है। तुम बच्चे कहॉ भी हो समझते हो यह मुरली जो छप कर आती है शिवबाबा की आती है। शिवबाबा बिगर ऐसे कोई सिखला नहीं सकते। बाप ही कहते हैं मुझे याद करो तो मैं तुमको वर्सा दूँगा। श्रीकृष्ण को तो 108 रानियॉ दी हैं। कितना गड़बड़ घोटाला है। बाप बच्चों को समझाते रहते हैं। माम एकम याद करो। और कोई भी दूसरे के नाम–रूप को याद नहीं करो। साकार के फोटो आदि रखने की भी दरकार नहीं है। साकार मनुष्यों के फोटो आदि तो तुम जन्म–जन्मांतर करे करते आए हो। उपासना करते आए हो। देवताओं आदि के चित्र रखना यह सब तुम्हारा छूट जाता है। भक्तिमार्ग का कुछ भी रहना ना चाहिए। जब पक्के देही अभिमानी बनेंगे तब ही उॅच पद पावेंगे। बाप कहते हैं जितना हो सके कोशिश करके अपने बाप को याद करते रहो तो पावन बनोगे। पावन बनने का और कोई उपाय है नहीं। इसलिए पतित–पावन को ही बुलाते हैं। आत्माएं बाप को याद करती हैं। शरीरधारी को तब याद करते जब देहअभिमानी बनते हैं। बाप घड़ी2 कहते हैं अपन को आत्मा समझो बाप को याद करते रहो। आत्माएं ही पतित , दुःखी बनी हैं। आत्मा कहती है मैं महाराजा था। अब रंक बन गया हूॅ। तुमको अब स्मृति आई है हम बाबा के बच्चे हैं। बाबा से हमने वर्सा पाया था। अब बाप कहते हैं सभी को यही बाप का परिचय दो इन जैसा शुभ कार्य और कोई होता नहीं। ऐसे शुभ कार्य में देरी नहीं करनी चाहिए। शरीर पर तो भरोसा नहीं है। ना जवान पर ना बूढ़े पर। इसलिए जो कुछ करना हो सो आज करो। कल2 करते काल खा जावेगा। बाप ने कितनी बड़ी यह हास्पिटल कम यूनिवर्सिटी खोली है जिससे हेल्थ, वेल्थ , हैप्पीनेस मिलती है। हेल्थ , वेल्थ है तो हैप्पी भी है। निरोगी काया है , धन भी है। मनुष्य सदा सुखी है। तो बाप कहते हैं जिसको यह शुभ कार्य करना हो तो अभी कर लो। सिर्फ तीन पैर पृथ्वी का लेकर यह हास्पिटल खोलो। सबको परिचय दो बाप का। बाप स्वर्ग का रचयिता है तो जरूर बाप ही स्वर्ग का वर्सा मिलना चाहिए। भारतवासियों को वर्सा पाना इन बातों को भारतवासी सहज समझ सकेंगे भगवान को ढूॅढने के लिए मंदिर है। आर्यसमाजी तो देवताओं को मानते नहीं। इसलिए वो ही दुश्मन बने है। समझते हैं यह चित्र आदि जो बनाए हैं। यह सब पाखण्ड है। विघ्न तो बहुत पड़ते रहेंगे। समझाना बड़ा सहज है। बाप का फरमान है। जल्दी2 मेरे साथ सगाई कर दो। सगाई करने से ही तुम वर्से के हकदार बन सकते हो। बाबा रुहानी सर्जन हैं। तुम उनके बच्चे कहलाते हो। तुम भी सर्जन ठहरे। जरूर आत्माओं को ज्ञान इन्जेक्शन लगाना पड़े। मनमनाभव। यह बड़े ते बड़ा इन्जेक्शन है। बाप की याद से ही सब दुःख दूर हो जाते हैं। यह एक ही दवाई है योग की। बच्चा जन्मता है और बाप की गोद में जाता है। तुमको भी पता है हम बेहद के बाप से वर्सा लेते हैं याद से। याद में ही अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं। इस याद को पक्का करते जाओ। सिर्फ तीन पैर पृथ्वी के ले यह हास्पिटल खोलो। यह तीन पैर पृथ्वी है ना। नहीं तो ऐसे ऊँच कालेज के लिए तो 50 एकड़ जमीन होनी चाहिए।

जहॉ बहुत मनुष्य आकर पढ़ें। ज्ञान .....गायन भी है तीन पैर पृथ्वी के नहीं मिलते थे और फिर विश्व के मालिक बन गए। तुम विश्व के मालिक बनते हो ना। 3 पैर पृथ्वी के कोई बड़ी बात नहीं। फिर आहिस्ते2 बढ़ता जावेगा। फाउंडेशन लगाने वाले को बहुत फायदा मिलता है। जैसे देखो कानपुर में माताजी सहारनपुर में अमरदेवी ने फाउंडेशन लगाया है तो कितने सेंटर खुल गए हैं। कितने कौड़ी से हीरे जैसा बनते हैं। करने वाले को बहुत फायदा होता है। बहुतों के कल्याण लिए ही हास्पिटल अथवा कालेज खोली जाती है। यह भी ऐसे है। बाहर में बोर्ड लगा दो। कर्तानिक फार हेल्थ , वेल्थ 21 जन्मों लिए हिंदी में कहेंगे 100परसेंट पवित्रता सुख–शांति की चिकित्सालय ; परंतु बच्चों ने सर्विस करने का शौक नहीं। कुटुम्ब आदि के जाल को मकड़ी की जाल कहा जाता। जाल में खुद भी फॅस पड़ते हैं। बाप आकर रावण रूपी मकड़ी के जाल से निकालते हैं। सतयुग में ऐसे नहीं कहेंगे। यहॉ आपे ही अपनी जाल में फॅस मरे हैं। यह है ही माया का राजा। कितनी बड़ी रावण की जाल है सारी सृश्टि पर। सभी अशोक वाटिका में बैठे हैं। इस रावण की जाल में सभी साधू–संत आदि फॅसे हुए हैं। जब तक बाप ना आए तब तक कोई इससे छूट ना सकते। माया ने जाल बिछाई है जिसमें कितने फॅसे हुए हैं। अब बाबा कहते हैं इन सुखों आदि सबको भूल अपन को आत्मा निश्चय करो और सबको यह रास्ता बताते रहो। यह सृष्टि चक्कर का राज दूसरा कोई भी बता ना सके। सबसे जास्ती गुरू तो इसने किए हैं। गुरुओं की भी जाल में फॅसे हैं। यह गुरुओं की जाल सबसे खराब। बिल्कुल ही बेमुख कर देते हैं। बाप कहते हैं इन सबकी जाल से निकल जाओ। सदगतिदाता एक ही बाप है। दुर्गतिदाता कौन है?रावण। रावण की मत पर गुरू लोग चलने वाले ठहरे ना। बाप कहते हैं इन सबको छोड़ मामेकम याद करो। याद से ही तुम्हारे पाप मिट जावेंगे। तो शुभ कार्य में देरी ना करनी चाहिए। मिसाल भी देख–देरी करते हैं मर जाते हैं फिर भोग पर जब आते हैं तो बहुत रोते हैं। फिर बोला जाता है देखो देर की। कल2 करते काल खा गया। अब ज्ञान तो उठा सकते हो। ऐसे2 डोरापा (उलहना) दिया जाता है। बहुत बच्चे खयाल करते हैं। अच्छा , कल यह करेंगे, फिर मर जाते हैं। इसलिए समझाया जाता है मनन जास्ती छोड़ दो। लौकिक बच्चे तुम्हारा कोई कल्याण करने वाले नहीं हैं। यह शिवबाबा तुम्हारा अब बच्चा बनते हैं। कहते हैं मुझे वारिस बनाओ मैं तुम्हारी बहुत सेवा करुॅगा। इसलिए बाबा पूछते भी हैं कितने बच्चे हैं। इस शिवबाबा को वारिस बनाया तो तुम मालामाल हो जावेंगे 21 जन्म लिए। बच्चे के ऊपर बलि चढ़ते हैं ना। कन्या तो दूसरे घर जाती है। बच्चे पिछाड़ी कितना हैरान होते हैं। बच्चा ना होता है तो दूसरी–तीसरी शादी भी करते हैं। बाबा कहते हैं वो लौकिक बच्चे तो तुम्हारी कुछ भी सेवा नहीं करेंगे। यह एक सबका बच्चा बनता है। एकदम सबका खाना आबाद करने ; परंतु कई डरते हैं पता नहीं सब कहॉ देना पड़े या क्या होगा? बाप कहते हैं नहीं। थोड़ा हिस्सा दे दो। अपने बच्चों आदि की पालना तो करनी है ; परंतु इस बच्चे का भी खयाल रखो। यह तो तुमको लाल कर देंगे। काशी के मंदिर में मनुष्य जाकर बलि चढ़ते हैं। समझते हैं शिव पर बलि चढ़ने से जीवनमुक्ति मिलती है। वास्तव में यह बात अभी की है। कहॉ की बात कहॉ ले गए हैं। वहॉ कुऑ बनाया है। उस पर तलवार रखी है। यह बाप बच्चों से बात कर रहे हैं। अगर इस बच्चे पर बलि चढ़े तो यह तुम्हारी बहुत सेवा करेंगे। स्वर्ग में महल दे देंगे। वो बच्चा तो कुछ भी नहीं करेगा। करके ब्राह्मण खिलावेंगे। मनुष्य दान–पुण्य जो करते हैं सो अपने लिए ही करते हैं। तो यह हास्पिटल खोलना कितना पुण्य है। साहुकार लोग तो 10–15 हास्पिटल खोल सकते हैं। ऐसे भी नहीं कि बड़ा मकान बनाओ। वो भी तो पैसे खतम हो जावेंगे। इसी पैसे से 50 सेंटर खोल दो। मकान बनाने में तो लाख–डेढ़ लाख लग जावेगा। तुम

50 हजार से हास्पिटल खोल दो किराया पर। फिर आपे ही अपने पैर पर खड़ा हो जावेगा। बाबा कितनी सहज युक्तियॉ सर्विस की बतलाते हैं। गंगा के कंठे पर जाय सर्विस करो। अपनी पीठ पर ही बाबा का परिचय लगा दो। पढ़ते रहेंगे। देह अभिमान छोड़ना है। कोई साहुकार ऐसे करे तो कहेगे वाह इनको तो देह अभिमान बिल्कुल नहीं है। बाप का परिचय देना है। बाप स्वर्ग का रचयिता है तो फिर हम नर्क में क्यों पड़ें हैं। अभी बाप आए हैं। कहते हैं देह के सब सम्बंध छोड़ मुझे याद करो। भारत स्वर्ग से नर्क कैसे बना है?ल.ना. ने 84 जन्म कैसे लिए?आओ तो कथा सुनावें। ढेर वहॉ इकट्ठे हो जावें। पतित–पावनी गंगा को भी कहते हैं तो जमुना को भी कहते हैं। अच्छा, गंगा पतित–पावनी है तो एक को पकड़ो ना। अब तुमने ड्रामा को जाना है। तो फिर समझाना है। अगर और को रोशनी ना देंगे तो कौन कहेगा इनकी बुद्धि में रोशनी है। सर्जन इन्जेक्शन लगा ना सके उनको सर्जन कैसे कहेंगे। तुम बच्चों को सारी रोशनी मिली है। 84 जन्मों का राज़ बुद्धि में है। इस ड्रामा को और एक्टर्स की एक्ट को जानना है। तो ऊँच ते ऊँच एक्ट है बाप की। बच्चों साथ पार्ट बजाते हैं। तुम भारत को स्वर्ग बनाते हो ; परंतु हो गुप्त। इनकागनीटो नॉनवायलेंस शिवशक्ति सेना। उनमें सब बातें समझानी है। कितने कुम्भ के मेले पर जाते हैं। यहॉ जिस्मानी कोई बात नहीं। तुम्हारी यात्रा उठते ,बैठते ,चलते है। याद से तुम पावन बनते हो। वो लोग कहते हैं टट्टी में भी परमात्मा है। बाबा कहते हैं तुम टटटी करते समय भी शिवबाबा को याद करो। वो फिर कह देते पत्थर, ठिक्कर , टट्टी आदि सबमें परमात्मा है। फर्क हो गया ना। बाप कहते हैं जहॉ भी बैठो मुझे याद करो। तो बच्चों को सर्विस करनी चाहिए। मंदिरों बहुत भक्त जाते हैं। बस। यह पट्टी लगा दो। बाप का परिचय देते रहो। युक्तियॉ तो बहुत बतलाते हैं। शमशान में जाकर समझाओ निराकार बाबा की महिमा और भी श्रीकृष्ण की महिमा। अब बताओ गीता का भगवान कौन? साथ में चित्र भी हो। सर्विस तुम बहुत कर सकते हो। फीमेल करे , कोई कुमारी करे तो अहो सौभाग्य। कुमारी तो सबसे अच्छी। कन्याओं का बाप तो है निराकार। कन्हैया कृष्ण नहीं था। यह है बाप। बाप को खयाल आता है कैसे बच्चों को सिखलावें। कल्प पहले भी ड्रामाअनुसार यही सुनाया था। फिर आज सुनाता हूँ। तो तुमको अंधों की लाठी बनना है। जिन बच्चों को परिचय मिलता है वो फिर दूसरों को ले आते हैं। उनका भी पुण्य होता है। अपन पास हिसाब रखो। जितना हम करेंगे फल तो मिलेगा ना। कोई को ले आवे तो उनको भी बहुत कल्याण हो जाता है। इन धन्धे में बच्चों को अटेंशन चाहिए। सर्विस ना करेंगे तो मिलेगा क्या? सर्विस 2 और सर्विस। तुम कहते हो गॉडली सर्विस पर हैं। घर की सर्विस भी भल करो। सब राज समझाते हैं। कोई अबला रावण के वश है। क्या कर सकती। तुम्हारी आत्मा शिवबाबा की याद में है। कोई जबरदस्ती कतल करते हैं , विकारी बनाते हैं तुम शिवबाबा की याद में हो तो वही दोष नहीं लगता ; परंतु सच्ची दिल चाहिए। सच्ची दिल पर ही साहब राजी होगा। श्रीमत पर चलना पड़े। विकारों का दान देना है। कोई क्रोध करते हैं तो उसका सामना ना करना है। हर्षितमुख रहना चाहिए। तुम योग में रहेंगे तो कुछ होगा नहीं। उस समय जैसे कि तुम अशरीरी हो। बाबा हम आपकी याद में हैं। यह शरीर हमने छोड़ दिया है यह तो कुत्ते मिसल खून चूसते हैं। कुत्ते को हड्डियॉ मिलती हैं तो दॉतों से ब्लड निकलता है वो भी चूसता है। बाप शिक्षा देते हैं बच्चे को कब विकार में ना जाने देना। अगर तुम्हारी आज्ञा ना मानते तो वो जैसे कुतरे मिसल हैं। अगर उनको धन दिया और उसने कोई पाप कर लिया तो उसका दण्ड तुम्हारे सिर पर आ जावेगा। बाबा राय देते हैं ना ; परंतु बहुत हैं जो कर के पीछे सुनाते हैं। समझते यह कर के पीछे बाप के बनेंगे। ऐसे करते2 मर जाते हैं तो खलास। तो बच्चों को सर्विस के लिए अनेक प्रकार की युक्तियॉ बतलाते हैं। साहुकार लोग तो बहुत सर्विस कर सकते हैं। कितना उनका नाम हो जाए। तुम बच्चों को यही धंधा करना है। यहॉ भी मंदिर के सामने तुम्हारा आश्रम हो। वो जड़ वो चैतन्य दूसरा कोई यह परिचय दे ना सके। ट्रेन में भी यही सर्विस करते रहो तो बाप भी खुश होगा। इस धंधे में लग जाओ तो भविश्य 21 जन्म सदा सुख का वर्सा मिलेगा। अच्छा, मात–पिता बापदादा का सिकीलधे बच्चों प्रति यादप्यार और गुडमार्निंग। ॐ।